ISSN 2454-1230

त्रयोदशोऽङ्कः, XIII[th] Issue

जनवरी-जून, 2021

January-June 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायाः सामान्यनियमाः

- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायाः मुख्यसंरक्षक-संरक्षक-प्रधानसम्पादक-प्रबन्धसम्पादक-सम्पादकसमीक्षक-परामर्शदातृसमस्तपदानि अवैतनिकानि सन्ति।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिका देश-विदेशस्थानां विद्यार्थिनां शोधार्थिनां शिक्षाविद्भिः विभिन्नविषयविशेषज्ञानाञ्च सोपज्ञविचारयुक्तानि गुणवत्तापरकाणि मूलानि शोधपत्राणि आमन्त्रयति।
- शोधपत्राणां प्रकाशनं सम्पादकस्य सम्पादकमण्डलस्य वा संस्तुत्यनुसारेण भवति, परं शोधपत्रस्था समस्तानुसन्धानानां लेखकस्यैव भविष्यति। सम्पादकमण्डलं लेखकस्य मतस्य समर्थनं न करोति। अत्र प्रकाशितेषु शोधपत्रेषु कस्यापि धर्म-जाति-सम्प्रदायविशेषस्य विरोधे लिखितलेखाः स्वीकृताः न भविष्यन्ति।
- सम्पादकमण्डलं शोधपत्राणि किञ्चित् परिवर्तनपूर्वकं प्रकाशयितुमधिकारि भविष्यति।
- सम्पादकेन सम्पादकमण्डलसदस्यैः स्वीकृताः वा अस्वीकृतलेखाः न प्रकाशयिष्यन्ते, विषयेऽस्मिन् तेषामेव निर्णयः अन्तिमः भविष्यति। अस्वीकृतलेखाः लेखकं प्रति न प्रेषयिष्यन्ते।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायां प्रकाशितानां शोधपत्राणां देश-विदेशानां शोधसंस्थाभिः विश्वविद्यालयैश्च अस्वीकृतौ प्रकाशक-सम्पादक-सम्पादकमण्डल-मुद्रकादीनां किमपि उत्तरदायित्वं नास्ति।
- अधिपत्रहरूपकाशनात्पूर्वमेव तत्रस्य सामग्री दुरुपयोगनिवारणाय नाडा करिष्यते।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकया सम्बद्धस्य कस्यापि विवादस्य कृते न्यायिकक्षेत्रं भीलवाड़ाजनपदस्थितन्यायालयस्य निर्णयः मान्यः भविष्यति।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायां शोधपत्रप्रकाशनार्थं लेखकाः शोधप्रविधानानुसारिलेखान् 5-7 पृष्ठेषु (3000-3500 शब्देषु) संस्कृत-हिन्दीभाषयोः Unicode – Kokila तथा च आङ्ग्लभाषायाः Times New Roman (Size 14) लिपिषु टङ्कणं विधाय पी.डी. (मुद्रितप्रस्तुतिः) अथवा ई-मेल माध्यमेन स्वकीय नाम-पदसङ्केत-चलदूरभाष-विवरणैः प्रेषयेयुः।
- शोधपत्रे प्रायः 150 शब्दानां शोधसंक्षिप्तिः (Abstract) मुख्यशब्दाः (Keywords) सन्दर्भाः (References) अन्ते सन्दर्भग्रन्थाश्च भवेयुः।
- सन्दर्भाः लेखकनाम-ग्रन्थनाम-व्याख्याकारनाम/टीकाकारनाम-प्रकाशकनाम-स्थल-वर्षसहितं पृष्ठसंख्यायुताः स्युः।

अणुसङ्केतः - shikshapatrika@gmail.com, shikshapriyadarshini777@gmail.com

दू. सं. - 8005470865

संस्थानस्य अन्तर्जालसङ्केतः - www.sevasansthan.in

पत्रिकायाः अन्तर्जालसङ्केतः - www.shikshapriyadarshini.com

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 13)

अनुक्रमणिका

	प्रबन्ध सम्पादकीय	viii
1.	कबीर के साहित्य एवं श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग के दोहे एवं श्लोकों का व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन प्रो. हरिहृदय अवस्थी एवं अमर नाथ	1
2.	श्रेष्ठ अध्ययन प्रवृत्ति प्रो. नीलाभ तिवारी एवं अनिल कुमार तिवारी	10
3.	प्रयाजयागः डॉ. शम्भु कुमार झा	13
4.	राजस्थान की नौवें दशक की हिन्दी कविता डॉ. अशोक कुमार शर्मा	21
5.	जैनेन्द्र व्याकरण में संज्ञाविधान डॉ जितेंद्र कुमार	33
6.	पाणिनीय व्याकरण में स्थानिवद्भाव : एक विश्लेषण डा रवि प्रभात एवं सुचेता	38
7.	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति एवं क्षेत्र डॉ. आरती शर्मा	42
8.	श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व डॉ. सुरेन्द्र महतो एवं डा. सुनीलकुमारशर्मा	47
9.	अधिगमाकलनम् डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	54
10.	वैकल्पिक शिक्षाः प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य डा. अजय कुमार	60
11.	माध्यमिकविद्यार्थिनां परास्मृतेः विश्लेषणात्मकमध्ययनम् डा. नितिन कुमार जैन एवं रेनु	71
12.	भारतीयदर्शने मूल्यानि डॉ. चक्रधरमेहेरः	80

शिक्षाप्रियदर्शिनी
अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका, त्रयोदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2021, ISSN : 2454-1230

10.

वैकल्पिक शिक्षा: प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य

डा॰ अजय कुमार, सहायकाचार्य,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सारांश

छात्रों को जरूरी कौशलों एवं ज्ञान से लैस करना और विज्ञान, टेक्नोलॉजी, अकादमिक क्षेत्र और इण्डस्ट्री में कुशल लोगों की कमी को दूर करते हुए देश को ज्ञान आधारित सुपर पॉवर के रूप में स्थापित करना है। छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना, भाषाई बाध्यताओं को दूर करने, दिव्यांग छात्रों के लिये शिक्षा को सुगम बनाने आदि के लिये तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल देना इत्यादि वर्तमान समय की मुख्य आवश्यकताएं है जिसे वैकल्पिक शिक्षा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है I सभी छात्रों को जीवन में सफलता के लिए समान अवसर मिलना चाहिए, लेकिन प्रत्येक छात्र समान रूप से नहीं सीखता है।

वैकल्पिक स्कूल अद्वितीय चुनौतियों या क्षमताओं वाले छात्रों को एक अलग शैक्षिक सेटिंग में सफल होने का अवसर प्रदान करते हैं। प्रत्येक छात्र शैक्षिक पृष्ठभूमि, सीखने की क्षमता और स्कूल में रुचि के मामले में अद्वितीय है। एक ही कक्षा के दो छात्र, जब एक ही परीक्षा दी जाती है, तो वे बहुत भिन्न अंक प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अकादमिक उपलब्धि सिर्फ पाठ्यक्रम से अधिक निर्धारित होती है। एक बच्चे का प्रदर्शन स्कूल में शिक्षक के शिक्षा स्तर, संसाधनों की उपलब्धता और पाठ्यक्रम जैसे इन-स्कूल कारकों से प्रभावित होता है। लेकिन यह अन्य कारकों जैसे छात्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति, गृह जीवन, और व्यक्तिगत या सीखने की चुनौतियों से भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत पत्र के द्वारा वैकल्पिक शिक्षा की प्रकृति, व्यूह रचनाओं, संभावनाओं और विकास की दृष्टि से जानने का प्रयास किया गया है I

बीज शब्द : वैकल्पिक शिक्षा, प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं, विकास का परिप्रेक्ष्य I

प्रस्तावना

वैकल्पिक शिक्षा के रूप में "एक स्कूल या कार्यक्रम जिसे स्थानीय या क्षेत्रीय शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित और संचालित किया जाता है जो छात्रों को एक गैर-परंपरागत शैक्षिक सेटिंग में प्रस्तुत किया जाता है और ऐसे छात्रों की सामाजिक, भावनात्मक, व्यवहारिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं को संबोधित करता है।"

वैकल्पिक शिक्षा में नामांकित छात्रों को कनेक्टिकट में सभी छात्रों के लिए समान शैक्षणिक मानकों से लाभ मिलता है, एक अलग या अनूठी सेटिंग के भीतर, जो पारंपरिक सेटिंग्स में पाई जाने वाली बाधाओं को संबोधित करता है। वैकल्पिक शिक्षा सकारात्मक संबंध बनाकर, छात्रों की व्यक्तिगत शक्तियों, प्रतिभाओं, सामाजिक/भावनात्मक/व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करके और शैक्षणिक कठोरता और निर्देश की सांस्कृतिक प्रासंगिकता

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIV[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायाः सामान्यनियमाः

- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायाः मुख्यसंरक्षक-संरक्षक-प्रधानसम्पादक-प्रबन्धसम्पादक-सम्पादकसमीक्षक-परामर्शकादिसमस्तपदानि अवैतनिकानि सन्ति।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिका देश-विदेशस्थानां विद्यार्थिनां शोधार्थिनां शिक्षाविदां विभिन्नविषयविशेषज्ञानाञ्च शोधप्रविधानुसारं लिखितानि गुणवत्तापरकाणि मौलिकानि शोधपत्राणि आमन्त्रयति।
- शोधपत्राणां प्रकाशनं सम्पादकस्य सम्पादकमण्डलस्य वा संस्तुत्याधारेण भवति, यत्र शोधसामग्र्याः समस्तमुत्तरदायित्वं लेखकस्यैव भविष्यति। सम्पादकमण्डलं लेखकस्य मतस्य समर्थनं न करोति। अत्र अवधेयमस्ति यत् कस्यापि धर्म-जाति-सम्प्रदायविशेषस्य विरोधे लिखितलेखाः स्वीकृताः न भविष्यन्ति।
- सम्पादकमण्डलं शोधपत्राणि किञ्चिद् परिवर्तनपूर्वकं प्रकाशयितुमधिकारि भविष्यति।
- सम्पादकेन सम्पादकमण्डलसदस्यैः समीक्षकैः वा अस्वीकृतलेखाः न प्रकाशयिष्यन्ते, विषयेऽस्मिन् तेषामेव निर्णयः अन्तिमः भविष्यति। अस्वीकृतलेखाः लेखकं प्रति न प्रेषयिष्यन्ते।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायां प्रकाशितानां शोधपत्राणां देश-विदेशानां शोधसंस्थाभिः विश्वविद्यालयैश्च अस्वीकृतौ प्रकाशक-सम्पादक-सम्पादकमण्डल-मुद्रकादीनां किमपि उत्तरदायित्वं नास्ति।
- अग्रिमाङ्कप्रकाशनात्परं पूर्वतनाङ्कस्य सामग्री दुरुपयोगनिवारणाय नाशयिष्यते।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकया सम्बद्धस्य कस्यापि विवादस्य कृते न्यायिकक्षेत्रं भीलवाडानगरस्थन्यायालयस्य निर्णयः मान्यः भविष्यति।
- शिक्षाप्रियदर्शिनी-शोधपत्रिकायां शोधपत्रप्रकाशनार्थं लेखकाः शोधप्रविधानुसारिलेखान् 5-7 पृष्ठेषु (3000-3500 शब्देषु) संस्कृत-हिन्दीभाषयोः Unicode – Kokila तथा च आङ्ग्लभाषायाः Times New Roman (Size 14) लिपिषु टङ्कणं विधाय पी.डी. (मुद्रितप्रत्यसहितं) अथवा ई-मेल माध्यमेन स्वकीय नाम-पत्रसङ्केत-चलदूरभाष-ईमेलसहितं प्रेषयेयुः।
- शोधपत्रे प्रायः 150 शब्दानां शोधसंक्षिप्तिका (Abstract) मुख्यशब्दाः (Keywords) सन्दर्भाः (References) अन्ते सन्दर्भग्रन्थाश्च भवेयुः।
- सन्दर्भाः लेखकनाम-ग्रन्थनाम-व्याख्याकारनाम/टीकाकारनाम-प्रकाशकनाम-स्थल-वर्षसहितं पूर्णसंख्यायुताः स्युः।

अनुसङ्केतः – shikshapatrika@gmail.com, shikshapriyadarshini777@gmail.com
दू. सं. – 8905479855
संस्थानस्य अन्तर्जालसङ्केतः – www.sevasansthan.in
पत्रिकायाः अन्तर्जालसङ्केतः – www.shikshapriyadarshini.com

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 14)
अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय viii

प्रबन्ध सम्पादकीय ix

1. **राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020** 1
प्रो. चान्दकिरण सलूजा

2. **'राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020' सन्दर्भे संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः** 6
प्रो. सन्तोषमित्तलः

3. **National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach** 12
Prof. Rachna Verma Mohan

4. **राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा** 21
डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'

5. **नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन** 32
डा. सुरेंद्र महतो

6. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना** 36
डा. दयानिधि शर्मा

7. **शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश** 43
डा. सुनील कुमार शर्मा

8. **NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives** 55
Dr. Jitender Kumar

9. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि** 67
डा. नितिन कुमार जैन

10. **नवराष्ट्रियशिक्षानीतेः परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा** 74
डा. मनीषजुगरानः

11. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन** 81
डा. अजय कुमार

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2021
ISSN : 2454-1230

11.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन

डा. अजय कुमार, सहायकाचार्य
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सारांश

केंद्र सरकार ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020' (National Education Policy- 2020) को मंज़ूरी दी है। नई शिक्षा नीति 34 वर्ष पुरानी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986' [National Policy on Education (NPE),1986] को प्रतिस्थापित करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। वर्ष 1968 और 1986 के बाद यह भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। NEP-2020 के तहत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र पर देश की जीडीपी के 6% हिस्से के बराबर निवेश का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य शिक्षा की पहुँच, समानता, गुणवत्ता, वहनीय शिक्षा और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान देना है। छात्रों को जरूरी कौशलों एवं ज्ञान से लैस करना और विज्ञान, टेक्नोलॉजी, अकादमिक क्षेत्र और इण्डस्ट्री में कुशल लोगों की कमी को दूर करते हुए देश को ज्ञान आधारित सुपर पॉवर के रूप में स्थापित करना है।

शिक्षा नीति में छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना, भाषाई बाध्यताओं को दूर करने, दिव्यांग छात्रों के लिये शिक्षा को सुगम बनाने आदि के लिये तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल देना इत्यादि इस नीति के मुख्य आकर्षण बिंदु है क्या इन को सरलता से प्राप्त किया जा सकेगा या फिर दुसाध्य: कार्य होगा? प्रस्तुत लेख नयी शिक्षा नीति-२०२० के सन्दर्भ में उन बिंदुओं के आलोक में विचार हेतु रचा गया है जिसके द्वारा पाठ्यचर्यागत परिवर्तन से संबंधित जटिलताओं को समझा जा सकें और वर्तमान में वो परिवर्तन किस प्रकार फलीभूत हो सकेंगे; के सन्दर्भ में जिज्ञासु जनो की जिज्ञासा शांत की जा सके I

बीज शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, पाठ्यचर्या, परिवर्तन

प्रस्तावना

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में आधुनिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता, विश्वास और उसका अनुकरण करने की निष्ठा कैसे विकसित की जा सकती है, इसके लिए हमारी वर्तमान शिक्षा कौन से प्रयास कर रही है? क्योंकि शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसे पाकर जब विद्यार्थी बाहरी व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है, तब उसमें प्राप्त शिक्षा से स्वतंत्र विवेक शक्ति की वृद्धि होनी चाहिए। क्या ऐसा होता है? क्या उस शिक्षा से सामाजिक समरसता का भाव उस विद्यार्थी निर्माण होता है? क्या सामाजिक व्यवहार में अहिंसा -भाईचारा जैसे विचारों का वह कोई उपयोग कर पाता है? क्या हमारी वर्तमान शिक्षा नीति

ISSN 2454-1230

अष्टादशोऽङ्कः, XVIII[th] Issue
जुलाई - दिसम्बर, 2023
July - December, 2023

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी
संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी
प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः
प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अंजूसेठः
श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अनुक्रमणिका

Message of the Patron

Editorial Message ix

प्रबन्धसम्पादकीयम् x

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 17 की समीक्षा xi

xii

संस्कृतालेखाः

ग्रहातिग्रहलक्षणबन्धस्वरूपं ततो मोक्षोपायश्च - देवज्योति-कुण्डु 1

महाभाष्यकृद्दिशा प्रत्ययाधिकारस्थानां योगविभागानां समीक्षा - बुलेट् मण्डल 9

स्मृतिप्रोक्तन्यायालयस्य स्वरूपम् - एकं समीक्षणम् - हेमन्त सरकारः 20

भास्कराचार्योक्तरीत्या अधिमासावमशेषाभ्यां मध्यमचन्द्रार्कयोरानयनविधिः, तदुपपत्तिश्च - गिरिशभट्ट बि. 27

कविपुण्डरीक पं.सम्पूर्णदत्तमिश्रविरचितासु रचनासु अलङ्कारप्रयोगः - डॉ. गेहप्रदीप शर्मा 35

हिन्दी आलेख

मानव के उत्थान में श्रीमद्भगवद्गीता एवं कठोपनिषद् की भूमिका - डॉ. नवदीप जोशी 41

पुराणों में नारी - हरेन्द्र कुमार शर्मा 49

अथर्ववेद में दीर्घजिवनीय विद्या - डॉ. वेणुधर दाश 55

पुरुषार्थ चतुष्टय में वैदिक दृष्टि - डॉ. शम्भु कुमार झा 64

भारतीय वैदिक काल में अर्थव्यवस्था - डॉ राजेश मौर्य 70

महाकवि कालिदास के ऋतुसंहार में मनोविज्ञान - डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा 79

मुद्गलपुराण में अष्टाङ्गयोग का वर्णन - जानी वंदना यज्ञप्रकाश 86

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा की भूमिका - डॉ. सविता राय 94

वेदों में योग का स्वरूप - डॉ. प्रदीप कुमार 104

हिन्दी नाटक में किन्नर विमर्श - किसान गिरजाशंकर कुशवाहा 112

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति के गुण - सोमवीर 119

हिंदी भाषा की अवधारणा और विकास - डॉ. अजय कुमार 125

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिय समकक्षावलि-समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
अष्टादशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2023
ISSN: 2454-1230

हिंदी भाषा की अवधारणा और विकास

डॉ. अजय कुमार
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीयविश्वविद्यालय), नई दिल्ली

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।" - माखनलाल चतुर्वेदी

उपरोक्त कथन के संदर्भ मे राष्ट्रीय एकता और संस्कृति की वाहक के रूप मे हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है जो अनन्य विशेषताओं के कारण प्राप्त हुआ है । जैसकि सेठ गोविंददास जी ने कहा है - "देश को एक सूत्र में बाँधे रखने एक भाषा की आवश्यकता है।" प्रस्तुत लेख हिन्दी के उदार और लचीले स्वरूप के बारे मे है जिसमे हिन्दी भाषा की णा को विभिन्न संदर्भों यथा: सामान्य अर्थ, उत्पत्ति और शाब्दिक अर्थ, विशिष्ट अर्थ तथा उनकी विशेषताओं द्वारा त किया गया है ताकि हम सभी हिन्दी के प्राचीन स्वरूप से लेकर वर्तमान तक की विकास यात्रा के बारे मे जान सके।

द - हिन्दी, भाषा, अवधारणा और विकास ।

मानव, ईश्वर की सृष्टि का एक सर्वश्रेष्ठ एवं बुद्धिमान प्राणी है। सभ्यता के आदिकाल से, अनेक कारणों से उसने श निर्माण किया। पारस्परिक संपर्क के लिये उसे भाषा की आवश्यकता पडी क्योंकि विचारों की अभिव्यक्ति एक भाषा के अभाव में असंभव थी। इस प्रकार मानव के विकास के साथ ही भाषा का जन्म हुआ।

इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और । समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह सीखे नहीं आती। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान म कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर ा, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है ी इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा । हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है । । का वर्णन भारतीय संविधान के भाग 17 एवं 8वीं अनुसूची में अनुच्छेद 343 से 351 में है। 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की संख्या 22 है – कश्मीरी, सिन्धी, पंजाबी, हिन्दी, बंगाली, आसामी, उड़िया, गुजराती, मराठी, कन्नड़,

- … 5-7 … (2000-3000 …) … Unicode-Kokila … Times New Roman (Size 14) …
- … 150 … (Abstract), … (Keywords), … (References) … 15 …

… shikshapatrika@gmail.com

… www.ssssansthan.org
… www.shikshapriyadarshini.com

शिक्षाप्रियदर्शिनी

SHIKSHA PRIYADARSHINI

15. **अथर्ववेद में जल चिकित्सा** 80
वेणुधर दाश
16. **सतत विकास एक मूल्यांकन** (पर्यावरण के विशेष संदर्भ में) 85
डॉ. राजेश मौर्य
17. **राजस्थानीय संस्कृत उपन्यासों में निरूपित भारतीय संस्कृति और नारी** 94
रवि शंकर शर्मा
18. **भारतीय दर्शन का आधार : जिज्ञासा** 98
श्रीमती डिम्पल जैसवाल
19. **कर्तव्यनिष्ठ श्री रामदूत हनुमान** 103
डॉ. विकास चौधरी
20. **नैषधीय चरित में समग्र स्वास्थ्य और कल्याण के लिए प्रदत्त योगशास्त्रीय विचारों का परिशीलन** 109
डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा
21. **बुंदेली लोक गीतों में राम** 114
डॉ. रमा आर्य
22. **उच्च शिक्षा में परिवर्तन संबंधी विश्लेषण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में** 122
डॉ. अजय कुमार
23. **शांखायन ब्राह्मण में प्राणविद्या का स्वरूप** 130
डॉ. निधि वेदरत्न

Papers in English
24. **Buddhist Vipassana: A Meditative Way of Human Well-Being** 134
Dr. Minakshi Sethy
25. **Sociology of Development** 141
Dr. Arti Sharma
26. **Constructivist Language teaching Methods** 145
Dr. Ekkurti Venkatswarlu
27. **Internationalisation Of Higher Education: An Instrument for Soft Power Diplomacy** 150
Thiyagarajan M
28. **Four Types of Yoga in Yogatattva-Upaniṣad** 157
Sujata Jena
29. **Awakening Kuṇḍalinī in Yogakuṇḍalinī Upaniṣad** 170
Sagar Mantry
30. **Yoga for Human Intelligence Development** 181
Ganta Naga Swathi

apor

TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

TIJER.ORG | ISSN : 2349-9249

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Certificate of Publication

The Board of

TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Is hereby awarding this certificate to

Dr. Ajay Kumar

In recognition of the publication of the paper entitled

A study of self-perception of adolescents in relation to academic achievement

Published in Volume 10 Issue 8, August-2023, | Impact Factor: 8.57 by Google Scholar

Co-Authors -

Paper ID - TIJER2308024

ISSN 2349-9249 TIJER
Technix International Journal for Engineering Research (TIJER)

Registration ID - 108235

Editor-In Chief

TIJER | ISSN : 2349-9249

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Monthly, Indexing in all Major Database & Metadata, Citation Generator

TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.tijer.org | Email: editor@tijer.org | ESTD: 2014

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.tijer.org | Email ID: editor@tijer.org

Published Paper : TIJER2308024

A study of self-perception of adolesce in relation to academic achievement

Paper Title: A study of self-perception of adolescents relation to academic achievement

Authors Name: Dr. Ajay Kumar

Download E-Certificate: Download

Author Reg. ID: TIJER_108235

Published Paper Id: TIJER2308024

Published In: Volume 10 Issue 8, August-2023

Abstract: Abstract: The presented study was conducted to know the self-perception of adolescents of secondary school students in relation to academic achievement of Rai Block, Sonepat, Haryana. The Self-perception checklist was standardized by K.N. SHARMA (1997) and Academic Achievement of students was taken from the marks obtained in last two annual examinations. The sample was considered of 100 students of adolescents. On studying the interpretation of scores of adolescents, it is found that there is no significant difference between self-perception of low and moderate, low and high achiever, moderate and high achiever of adolescents. It is also found that there is a

"A Study of Self-Perception of Adolescents in Relation to Academic Achievement"

Dr. Ajay Kumar, Assistant Professor,
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi

Abstract:

The presented study was conducted to know the self-perception of adolescents of secondary school students in relation to academic achievement of Rai Block, Sonepat, Haryana. The Self-perception checklist was standardized by K.N. SHARMA (1997) and Academic Achievement of students was taken from the marks obtained in last two annual examinations. The sample was considered of 100 students of adolescents. On studying the interpretation of scores of adolescents, it is found that there is no significant difference between self-perception of low and moderate, low and high achiever, moderate and high achiever of adolescents. It is also found that there is a positive correlation between self-perception and academic achievement of adolescents. The findings obtained in the study have implication for guidance workers, counselors and teachers. The administrators such as the principals and social workers may also be benefitted in the sense that they will understand how these children may be helped.

Keywords: Self-perception, Adolescents, Secondary School, Academic Achievement.

INTRODUCTION

Self-perception is how we see ourselves – and we don't see ourselves exactly as we truly are. Read on to learn about how the theory of self-perception and how we can come to see ourselves more accurately. How I see myself is a constantly evolving aspect of who I am. In other words, my self-perception is always changing – it is subject to the whims of how I feel on a given day, what is going on around me, and the last thing somebody said to me. For people with certain mental health disorders, self-perception is a constantly difficult and painful process; for all of us, it can range from gratifying to utterly humiliating. Why is this so? Let's learn about the science behind self-perception, so we can see ourselves in as loving and effective a way as possible.

Students' academic performance is an issue of paramount importance, in our education system. Good performance in national examinations is the gateway to higher education and a satisfying career. A lot of work has been done, and research carried out, to find out the major factors that influence students' academic performance. The issue of academic performance has remained an issue of concern for, students, teachers, parents and education stakeholders. However, the major factors influencing student's academic performance could likely be within the student him/herself. The purpose of this study therefore was to find out the relationship between Self-concept of students and their academic performance.